AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
रीतु सुन्डी
सहायक आचार्य
एस. पी. कॉलेज, दुमका, झारखण्ड, भारत
डॉ. मुकेश कुमार
सह–आचार्य
शैक्षिक अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार, भारत

शोध सार

जीवन निर्माण के लिए विद्यालयी जीवन, समाज एवं परिवार अति महत्वपूर्ण है, जिसका प्रभाव विद्यार्थी के भविष्य में पड़ता है। विद्यार्थियों में आवश्यक गुण एवं योग्यता विद्यालय, समाज एवं परिवार से ही विकसित होता है। परिवार, समाज और विद्यालय का प्रभाव विद्यार्थी के भावी जीवन को प्रभावित करता है। दसवीं एवं उच्चतर माध्यमिक/इंटर/बारहवीं के विद्यार्थी दुविधा की स्थिति में सामान्यतः रहते हैं। कौन सा विषय किस–किस व्यवसाय के लिए उपयुक्त एवं उचित है तथा तैयारी की रणनीति कैसी होगी आदि। शिक्षा अर्जित करने के क्रम में शहरी तथा ग्रामीण के विद्यार्थियों में विभिन्न अंतर देखने को मिलता है। सामाजिक, आर्थिक, परिवारिक एवं जैविक तत्व विद्यार्थी के व्यावसायिक विकास के चयन में अहम भूमिका देते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अधययन करना है। विभिन्न शोध–प्रबंध, शोध पत्रों, पुस्तिका एवं समाचार पत्रों के माध्यम से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी भविष्य में मेडिकल, इंजीनियरिंग, पुलिस और शिक्षा क्षेत्र में जाने के इच्छुक है। इसके विपरीत वर्तमान में विद्यार्थी अधिकतर व्यवसायों से अवगत नहीं पाये गये। शोध परिणाम व्यावसायिक संबंधी निर्णय लेने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सहयोग करेगा। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक चुनाव में विभिन्नता है। प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक रूचि से संबंधित डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत व्यावसायिक रूचि प्रपत्र का प्रयोग किया गया। व्यवसाय के चुनाव में लिंग, समाज, भाषा, क्षेत्र, सुख–सुविधा, वेतन एवं अवकाश का भी प्रभाव प्रतीत होता है। समान शिक्षा पाने के बावजूद छात्र–छात्राओं के व्यवसाय चुनाव में अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द

व्यावसायिक आकांक्षा, शिक्षक, विद्यार्थी, समाज.

प्रस्तावना

विद्यालय समाज का एक लघु रूप है, जिसमें शिक्षक समाज के सबसे महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों को प्राप्त होने वाला उचित सहयोग, निर्देशन, सलाह और प्रेरणा से ही किसी भी देश का सामाजिक और आर्थिक विकास सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त करता है। प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय (जीविकापार्जन) तक की शिक्षा प्राप्त करने के दौरान उद्देश्य निर्धारित करने के क्रम में शिक्षक की विशेष भूमिका होती है। शिक्षक के सानिध्य रहकर ही विद्यार्थी भविष्य से संबंधित विभिन्न योजनाओं एवं तात्कालिक स्थिति परिस्थिति से अवगत होता है, तथा अपनी व्यावसायिक रूचि एवं आकांक्षा से परिचित होता है। एक विद्यार्थी का अधिकतर समय विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में व्यतीत होता है।

जहां विचार, मूल्य और कार्य किसी न किसी तरह विद्यार्थियों को प्रभावित एवं आकर देता है। शिक्षकों में उदंड, अवसाद ग्रस्त, बिगड़े, पृथक और अनुशासनहीन बच्चों के जीवन को बदलने एवं नया रूप देने की क्षमता होती है। शिक्षण एक कठिन कार्य है,जहां शिक्षक अपनी शिक्षण–विधि, रणनीति, दैनिक जीवन से संबंधित विभिन्न उदाहरणों तथा आकर्षक व्यवहार से विद्यार्थियों के जीवन को प्रभावित करने की प्रवृति रखते है। शिक्षक तथा अभिभावक भी अपने स्तर से विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों से अवगत कराते हैं। जिससे विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुकूल उचित विषय का चयन कर विषय आधारित क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकें। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। विभिन्न शोधों के माध्यम से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी भविष्य में मेडिकल, इंजीनियरिंग, पुलिस और शिक्षक क्षेत्र में जाने के इच्छुक है। ये परिणाम व्यावसायिक संबंधी निर्णय लेने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सहयोग करेगा। शिक्षा के प्रकाश में विद्यार्थी स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण एवं व्यवहार में सकरात्मक परिवर्तन लाता है, जिसका परिणाम शैक्षिक उपलब्धि द्वारा प्रदर्शित होता है। विद्यार्थी की रूचि, आंकाक्षा, अभिवृति, बुद्धि, प्रेरणा एवं जिज्ञासा जितनी उच्च स्तर की होगी, उसमें भविष्य को लेकर आगे बढ़ने एवं उपलब्धि अर्जित करने की उतनी प्रबल इच्छा होती है।

जॉन डीवी "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावारण है जहां जीवन के कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से डी जाती है कि विद्यार्थियों का विकास वांछित दिशा में हो।"

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों के अन्तर्गत विद्यार्थियों को जीविकापार्जन के लिए तैयार करना है। विद्यार्थियों को योग्य बनाना ताकि विभिन्न व्यवसायों में से अपनी रूचि एवं क्षमता के अनुकूल एक व्यवसाय का चयन कर सकें। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति,2020 में भी व्यावसायिक शिक्षा में विशेष बल दिया गया। व्यावसायिक शिक्षा से पूर्व विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि से विद्यार्थियों को स्वयं अवगत होना अति मत्वपूर्ण हैं। विभिन्न व्यवसायों के संबंध में विद्यार्थियों को जानकारी सीमित है। एक व्यवसाय को उचित, संपन्न, उच्च एवं आदरणीय रोजगार समझते हैं और दूसरे की उपेक्षा एवं निम्न स्तरीय समझते हैं। स्थानीय योजनाओं एवं रोजगार मेला के सहयोग से विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों से सबंधित अवसरों से परिचित कराया जाये, ताकि भविष्य में अनावश्यक निराशा का सामना न करना पड़े। छात्र–छात्राओं के मध्य व्यावसायिक रूचि में कितना अंतर पाया जाता है, यह जानने के लिए अध्ययन की आवश्यकता हुई जिसके पश्चात् विद्यार्थियों को आवश्यकता अनुरूप उचित दिशा–निर्देश दिया जा सकेगा।

रूचि

रूचि एक मानसिक प्रवृति है, जिसके कारण व्यक्ति किसी विशेष कार्य, विषय या वस्तु की और आकर्षित होता है और उसे करने में आनंद महसूस करता है। रूचि से तात्पर्य व्यक्ति की पसंद से होता है, जिसे व्यक्ति प्राप्त एवं हासिल करना चाहता है। दैनिक क्रिया–कलाप से संबंधित वस्तु या भविष्य से संबंधित लक्ष्य भी होता है। व्यक्ति अपने मन एवं ध्यान को एकत्रित कर किसी वस्तु, उद्दीपन या कार्य विशेष के संपादन में निरंतरता बनाकर, वांछित उद्देश्य की पूर्ति में यथाशक्ति सहयोग प्रदान करता है। इस तरह की रूचि के पीछे व्यक्ति की इच्छा, मूलभूत आवश्यकता एवं अभिप्रेरक का योगदान होता है। जब हम कोई कार्य करते हैं, और उस कार्य में रूचि इसलिए आता है क्योंकि उस कार्य को करने में आनंद एवं संतुष्टि प्राप्त होता है। जिस तरह विधार्थी विभिन्न विषयों में अपनी रूचि के आधार पर अपना पसंदीदा विषय चयन करता है और उसमें अपनी शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित करता है उसी तरह विभिन्न व्यवसायों में से भी विशेष व्यवसाय का चयन कर उस क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त करता है, जो व्यक्ति की रूचि को व्यक्त करता है।

मैक्डूगल "रूचि छिपा हुआ अवधान है और अवधान रूचि का क्रियात्मक रूप है।"

एडवर्ड ली थोर्नडायक "रूचि वह मानसिक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति किसी विशेष वस्तु या कार्य की और ध्यान और आकर्षण अनुभव करता है।"

व्यावसायिक रूचि

किसी व्यक्ति का विशिष्ट कार्यों, गतिविधियों या रोजगार के क्षेत्रों के प्रति स्वाभाविक पसंद, जिज्ञासा और झुकाव से संबंधित है। यह कार्य प्रदर्शन, संतुष्टि और प्रशिक्षण परिणामों को प्रभावित करनेवाली अपेक्षाकृत स्थिर व्यक्तिगत प्राथमिकतायें हैं, जो रोजगार चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक ऐसी प्रेरक शक्ति है जो किसी कार्य को तल्लीनता से करने के लिए प्रेरित करती है जो व्यक्ति को चयन करने में सहयोग करता है कि वह किस तरह का कार्य करने का इच्छुक है।

व्यावसायिक रूचि जन्मजात, अर्जित एवं वातावारण के अनुरूप भी निर्धारित होती है। शिक्षा पूर्ण करने या शिक्षा ग्रहण करने के दौरान व्यक्ति अनेक कार्य करता है, पर उसमें मन नहीं होता और सुख एवं संतोष की प्राप्ति नहीं होता किन्तु जब कार्य रूचि के अनुकूल हो तो कार्य के संपादन का स्तर ऊँचा रहता है और सुख एवं संतोष की प्राप्ति होती है। अतः इस प्रकार का व्यवसाय व्यावसायिक रूचि के अन्तर्गत आता है।

अध्ययन का उद्देश्य

छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अधययन करना।

शोध परिकल्पना

छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध पत्र में झारखंड राज्य में अध्ययनरत उच्चतर माध्यमिक/इंटर/बारहवीं स्तर के विद्यार्थियों तक परिसीमित किया गया है। उच्चतर माध्यमिक/इंटर/बारहवीं स्तर के विद्यार्थियों की जनसंख्या से किया गया है, कुल 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें 50 छात्र और 50 छात्राएं हैं।

परीक्षण का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक रूचि से तात्पर्य डॉ.एस.पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत व्यावसायिक रूचि प्रपत्र के प्राप्त परिणामों से है। सामान्य रूचि आवश्यकता, इच्छा तथा लक्ष्य से संबंधित होती है। इसमें व्यवसाय के 10 क्षेत्र है एवं 10 क्षेत्र के अन्तर्गत 20 व्यवसाय है। इसमें 10 प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्र साहित्यक, वैज्ञानिक, प्रशासकीय, वाणिज्य, निर्माण कार्य, कलात्मक, कृषि, प्रवर्तक, समाजिक तथा घरेलु/गृहस्थी शामिल है। इस परीक्षण का निर्माण डॉ.एस.पी. कुलश्रेष्ट द्वारा 1971 में किया गया, परीक्षण के निर्माण का उद्देश्य विद्यार्थियों का सहयोग करना, व्यावसायिक रुचियों को मापना, जिससे वे बेहतर भविष्य के लिए उचित व्यवसाय क चयन एवं निर्णय ले सकें। परीक्षण की विश्वसनीयता 0.69 एवं परीक्षण की वैधता 0.74 वैधता गुणांक है। प्रयुक्त व्यावसायिक रूचि प्रपत्र में 13 से 21 आयु के विद्यार्थियों के लिए प्रमापीकृत है। प्रपत्र में 10X10 के 100 खाने हैं, जिसमें प्रत्येक व्यावसायिक क्षेत्र के 20 व्यवसाय है, प्रपत्र के प्रत्येक व्यवसाय में दो व्यवसाय है, इन दोनों व्यवसायों में जो व्यवसाय विद्यार्थी को पसंद एवं उचित लगेगा, उसमें सही का टिक चिन्ह (✓) का चिह्न लगाकर प्रतिक्रिया देना है। जो व्यवसाय विद्यार्थी को पसंद नहीं है, उसमें गलत (X) का का चिह्न लगाकर प्रतिक्रिया देना है।

संकलित आंकड़ों का प्रयोग परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं सत्यापित हेतु किया गया। शोध प्रक्रिया में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक–विचलन तथा t–मान का प्रयोग किया गया है।

चयनित विद्यालय का विवरण

क्रम	संस्थान के नाम	न्यादर्श
1.	टाटा कॉलेज, चाईबासा	25
2.	एम.आई.रुंगटा 10+2 स्कूल, चाईबासा	25
3.	डी.पी.एस इंटर कॉलेज, चाईबासा	25
4.	संत जेवियर इंटर कॉलेज, लुपुन्गुटू, चाईबासा	25

विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि में अंतर की सार्थकता

क्रम	VIR का क्षेत्र	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	t–मान	df	परिणाम
01.	साहित्यक	छात्र	50	8.11	2.59	1.16	98	स्वीकृत
		छात्राएं	50	6.65	2.33			
02.	वैज्ञानिक	छात्र	50	9.53	6.59	0.73	98	स्वीकृत
		छात्राएं	50	7.53	3.20			
03.	प्रशासकीय	छात्र	50	8.17	4.15	2.11	98	अस्वीकृत
		छात्राएं	50	6.00	3.46			
04.	वाणिज्य	छात्र	50	7.23	2.76	1.45	98	स्वीकृत
		छात्राएं	50	6.45	2.47			
05.	निर्माण कार्य	छात्र	50	7.15	2.31	2.13	98	अस्वीकृत
		छात्राएं	50	6.42	2.09			
06.	कलात्मक	छात्र	50	8.21	3.88	1.11	98	स्वीकृत
		छात्राएं	50	9.42	3.23			
07.	कृषि	छात्र	50	7.65	3.76	2.43	98	अस्वीकृत
		छात्राएं	50	5.13	3.81			
08.	प्रवर्तक	छात्र	50	8.40	3.42	2.44	98	अस्वीकृत
		छात्राएं	50	7.30	4.32			
09.	समाजिक	छात्र	50	8.92	4.23	1.47	98	स्वीकृत
		छात्राएं	50	6.83	3.42			
10.	घरेलु	छात्र	50	8.21	4.09	0.91	98	स्वीकृत
		छात्राएं	50	7.00	3.65			

0.05 सार्थकता स्तर

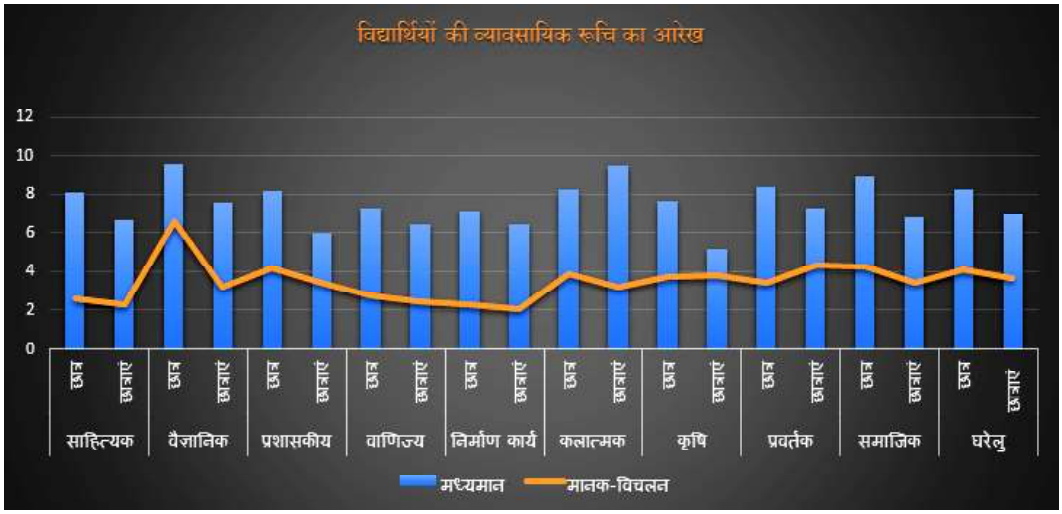

परिणाम

व्यावसायिक रूचि के साहित्यक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 8.11 तथा मानक–विचलन 2.59 तथा छात्राओं का मध्यमान 6.65 तथा मानक–विचलन 2.33 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 1.16 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के साहित्यक क्षेत्र में सार्थक अंतर नहीं है।

व्यावसायिक रूचि के वैज्ञानिक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 9.53 तथा मानक–विचलन 6.59 तथा छात्राओं का मध्यमान 7.53 तथा मानक–विचलन 3.20 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 0.73 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के वैज्ञानिक क्षेत्र में सार्थक अंतर नहीं है।

व्यावसायिक रूचि के प्रशासकीय क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 8.17 तथा मानक–विचलन 4.15 तथा छात्राओं का मध्यमान 6.00 तथा मानक–विचलन 3.46 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 2.11 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से अधिक है, अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के प्रशासकीय क्षेत्र में सार्थक अंतर है।

व्यावसायिक रूचि के वाणिज्य क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 7.23 तथा मानक–विचलन 2.76 तथा छात्राओं का मध्यमान 6.45 तथा मानक–विचलन 2.47 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 1.45 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के वाणिज्य क्षेत्र में सार्थक अंतर नहीं है।

व्यावसायिक रूचि के निर्माण कार्य क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 7.15 तथा मानक–विचलन 2.31 तथा छात्राओं का मध्यमान 6.42 तथा मानक–विचलन 2.09 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 2.13 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से अधिक है, अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के निर्माण कार्य क्षेत्र में सार्थक अंतर है।

व्यावसायिक रूचि के कलात्मक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 8.21 तथा मानक–विचलन 3.88 तथा छात्राओं का मध्यमान 9.42 तथा मानक–विचलन 3.23 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 1.11 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को ज के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0.05 स्तर में सारणी मान t के मान से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के कलात्मक क्षेत्र में सार्थक अंतर नहीं है।

व्यावसायिक रूचि के कृषि क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 7.63 तथा मानक–विचलन 3.76 तथा छात्राओं का मध्यमान 5. 13 तथा मानक–विचलन 3.81 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 2.43 है, ज सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को ज के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0.05 स्तर में सारणी मान t के मान से अधिक है, अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के कृषि क्षेत्र में सार्थक अंतर है।

व्यावसायिक रूचि के प्रवर्तक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 8.40 तथा मानक–विचलन 3.42 तथा छात्राओं का मध्यमान 7.30 तथा मानक–विचलन 4.33 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 2.44 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से अधिक है, अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के प्रवर्तक क्षेत्र में सार्थक अंतर है।

व्यावसायिक रूचि के सामाजिक क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 8.92 तथा मानक–विचलन 4.23 तथा छात्राओं का मध्यमान 6.83 तथा मानक–विचलन 3.42 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 1.47 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0. 05 स्तर में सारणी मान t के मान से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के समाजिक क्षेत्र में सार्थक अंतर नहीं है।

व्यावसायिक रूचि के घरेलु क्षेत्र में छात्रों का मध्यमान 8.21 तथा मानक–विचलन 4.09 तथा छात्राओं का मध्यमान 7. 00 तथा मानक–विचलन 3.65 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह का t मान 0.91 है, t सारणी मान स्वतंत्रतांश 98 के सारणीमान के 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.98 है। जो t के प्राप्त मान को t के सारणीमान से तुलना करने से पाया गया कि t मूल्य 0.05

स्तर में सारणी मान t के मान से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के घरेलु/गृहस्थी क्षेत्र में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि संबंधी पसंद–नापसंद को पहचान कर बेहतर भविष्य के लिए निर्देशित किया जा सकता हैं। विशिष्ट योग्यता, इच्छा एवं रूचि को जानकर विद्यार्थियों को तात्कालिक व्यावसायिक ज्ञान तथा निर्देशन देने की व्यवस्था दिया जा सकता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक चुनाव में विभिन्नता है। व्यवसाय के चुनाव में लिंग, समाज, भाषा, क्षेत्र, सुख–सुविधा, वेतन एवं अवकाश का भी प्रभाव प्रतीत होता है। समान शिक्षा पाने के बावजूद छात्र–छात्राओं के व्यवसाय चुनाव में अंतर पाया गया। इन समस्याओं के समाधान के लिए गुणवत्तापूर्ण तथा व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके आधार पर विद्यार्थी अपनी योग्यता, रूचि और उपलब्धि के अनुरूप उचित व्यवसाय का चयन कर सकें।

सन्दर्भ सूची

1. अलवी, खादिज; सल, एम.डी.रहीम एंड अवांग, अब्द हेयर. (2011) वर्क एस्टीम एंड री–ब्रांडिंग ऑफ टेक्निकल एजुकेशन एंड वोकेशनल ट्रेनिंग फ्रॉम द पर्सपेक्टिव ऑफ पेरेंट्स एंड टीचर्स. *जर्नल ऑफ टेक्निकल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग.* 3(2), 1–17.
2. बोरुह, निबेदिता (2022) वोकेशनल एजुकेशन इन इंडियाः इश्यूज एंड चौलेंजेस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेल्थ साइंसेज.* 6 (1), 3385–3391.
3. भट्टाचार्य,परिमल; सिन्हा, मुक्तिपदा एंड दास, कुमार सुबरना (2021) इम्प्लीमेंटेशन ऑफ वोकेशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम अंडर स्टेट बोर्ड सेकेंडरी लेवल स्कूलस इन कोलकत्ताः चल्लेंजेस एंड ओप्पोर्तुनिटिएस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आल रिसर्च एजुकेशन साइंटिफिक मेथड्स.* 9(5), 718–732.
4. जोशी, धनंजय (2025) *वोकेशनल एजुकेशन इन स्कूलस,* पर्गओं इंटरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. जॉन, मेरी एंड राव, रामा (1981) फ्यूचर टाइम रेस्पेक्टिव सेल्फ कन्सेप्ट एंड वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ एडोलैसैंट्स. यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास. http://hdl-handle.net/10603/100561, Accessed on 10/03/2026.
6. ओबराय,एस.सी. (2012) *शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श,* इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
7. कुमार, प्रसन्न (2016) इदेंतीफयिंग वोकेशनल इंटेरेस्ट ऑफ हाई स्कूल स्टूडेंट्स, *इंटरनेशनल एजुकेशनल ई–जर्नल,* 5(2), 72–77.
8. लोपामुद्रा एंड वाघासिया (2025) कंस्ट्रक्शन एंड स्टैण्डरडाइजेशन ऑफ ए वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी फॉर द स्टूडेंट्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी,राजकोट।
9. नीरजा (2019) ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू डिफरेंट स्ट्रीम्स. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटीस.* 10(3), 340–344.
10. रहत, सुल्ताना एंड खानुम, बख्तेनासर (2022) ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ थे वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ द स्टूडेंट्स ऑफ 9जी स्टैण्डर्ड ऑफ उर्दू एंड मराठी मीडियम स्कूलस ऑफ औरंगाबाद सिटी. डॉ. बाबासाहेब अम्बेदकर मर्द्वाडा यूनिवर्सिटी, औरंगाबाद. http://hdl.handle.net/10603/104888, Accessed on 22/03/2026.
11. शर्मा,आर. ए. एंड चुतुर्वेदी, शिखा (2017) शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श, आर.लाल., दिल्ली।
12. ठाकोर, हिना पी. एंड पटेल, वीनाबेन (2013) ए स्टडी ऑफ वोकेशनल इंटरेस्ट ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन कान्टेक्स्ट ऑफ सम वेरिएबल, कदी सर्वा विश्वविध्यालय, गांधीनगर, गुजरात, http://hdl.handle.net/10603/104888, Accessed on 29/03/2026.

––==00==––